हिन्दी

बहारे तहरीर

हिस्सा 5

Bahaar -e- Tehreer (Part 5)
Language : Hindi
By Abde Mustafa Official
Published : May, 2020

शफा'अत

रोज़े क़ियामत जब तमाम अम्बिया -ए- किराम फरमायेंगे कि :

اذھبوا الی غیری

(तुम किसी और के पास जाओ)

उस वक़्त हमारे आक़ा मुहम्मद ﷺ फरमायेंगे :

انا لھا

(मै शफा'अत के लिये हूँ)

(1) صحیح بخاری، کتاب التفسیر، 2/684
(2) صحیح مسلم، کتاب الایمان، 1/111
(3) مسند امام احمد بن حنبل، 2/435
(4) سنن ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، 4/196
(5) المواھب اللدنیۃ، 4/446
(6) صحیح بخاری، کتاب التوحید، 2/1101
(7) صحیح مسلم، باب اثبات الشفاعۃ، 1/108
(8) سنن ابن ماجہ، 329
(9) سنن ترمذی، ابواب التفسیر، 3159
(10) سنن ترمذی، ابواب المناقب، 5/154
(11) الخصائص الکبری، 2/218
(12) مسند احمد بن حنبل، عن ابی بکر الصدیق، 1/5
(13) موارد الظامان، 642
(14) مسند ابی یعلی، 1/59
(15) کنز العمال بہ حوالہ البزار، 14/268

(16)مسند احمد بن حنبل، عن عبد اللہ بن عباس، 1/281
(17)مسند ابي يعلى، عن عبد اللہ بن عباس، 3/5
(18)المعجم الكبير، 6/248
(19)السنة لابن ابي عاصم، 190
(20)المصنف لابن ابي شيبه، 6/312
(ملخصاً:ضياء الدين المتين فى تسهيل تجلى اليقين)

*कहेंगे और नबी **"इज़हबू इला गैरी"***
*मेरे हुज़ूर के लब पर **"अना लहा"** होगा।*

अब्दे मुस्तफ़ा

निकाह हो तो ऐसा

हज़रते सलमान फारसी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का निकाह है...,
बारात में आपके दोस्त अहबाब भी दुल्हन के घर चले...,
घर पहुँचे तो आप रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने इनसे फरमाया :
"अल्लाह त'आला आप लोगों को जज़ा -ए- खैर अता फरमाए, अब आप लोग लौट जायें"
और घर के अंदर ना जाने दिया जिस तरह के बेवकूफ लोग अपने दोस्तों को ज़ौजा के घर दाखिल कर लेते हैं।
जब आप रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने घर खूब सजा धजा देखा तो फरमाने लगे कि तुम्हारे घर को बुखार आ गया है या काबा शरीफ यहाँ मुन्तक़िल हो गया है?
अहले खाना कहा कि ऐसा नहीं है,
फिर आप रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने दरवाज़े पर लटके पर्दे के सिवा सारे पर्दे उतरवा दिये फिर अंदर दाखिल हुये और वहाँ बहुत सारा सामान देखा तो पूछा कि इतना समान किस लिये है?
घर में मौजूद लोगों ने कहा कि ये आपके और आपकी ज़ौजा के लिये है।

आपने फरमाया : मुझे मेरे खलील मुहम्मद ﷺ ने ज़्यादा मालो दौलत जमा करने की नहीं बल्कि इस बात की नसीहत फरमायी थी कि तुम्हारे पास दुनियावी माल सिर्फ इतना हो जितना मुसाफिर का ज़ादे राह होता है।
फिर आप ने वहाँ एक खादिम को देखा तो पूछा कि ये किस के लिये है?
घर वालों ने कहा कि ये आप की और आप की अहलिया की खिदमत के लिये है।
आप ने फरमाया : मुझे मेरे खलील ﷺ ने खादिम रखने की नसीहत नहीं फरमायी बल्कि सिर्फ उसे रोकने का फरमाया जिस से मैं निकाह करूँ और फरमाया कि अगर तुम ने (अपने सुसराल वालों से) मज़ीद कुछ लिया तो तुम्हारी औरतें तुम्हारी ना फरमान हो जायेंगी और इसका गुनाह खाविन्द (हसबेण्ड) पर होगा और औरतों के गुनाह में भी कोई कमी नहीं होगी!
फिर आप रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने वहाँ मौजूद औरतों से फरमाया कि तुम सब यहाँ से जाओगी या यूँ ही मेरे और मेरी बीवी के दरमियान आड़ बनी रहोगी? वो बोलीं कि हम चली जायेंगी।
जब आप अपनी बीवी के पास गये तो फरमाया : जो मैं कहूँगा मानोगी?
बीवी बोली : जी हाँ! मै आप की इता'अत करूँगी।
फिर आप ने फरमाया : मुझे मेरे खलील ﷺ ने नसीहत फरमायी है कि जब अपनी बीवी के पास जाओ तो उसके साथ मिल कर अल्लाह त'आला की इबादत करो।
फिर दोनो मियाँ बीवी उठे और जब तक हो सका अल्लाह त'आला की इबादत में मसरूफ रहे, उसके बाद हक़ -ए- ज़ौजियत अदा किया।

(ملخصًاوملتقطاً:حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء، اردو ترجمہ بہ نام اللہ والوں کی باتیں، ج1، ص348، 349، طمکتبۃ المدینۃ کراچی، س1434ھ)

काश कि हम भी अपने निकाह कें दुनिया की रंगीनियों को छोड़कर सुन्नत -ए- मुस्तफ़ा की सादगी को अपनायें,
अल्लाह त'आला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फरमाये।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

रमज़ान का आखिरी जुमुआ और क़ज़ा नमाज़

कुछ लोग इस गलत फहमी में मुब्तला हैं के रमज़ान के आखिरी जुमे को चंद रकअतें पढ़ने से पूरी उम्र की क़ज़ा नमाज़ें मुआफ़ हो जाती है।
बाज़ जगहों पर तो इस का खास एहतेमाम भी किया जाता है के मानो कोई बम्पर ऑफर आया हो।
एक मर्तबा मैंने अपने मुहल्ले की मस्जिद में देखा के एक इश्तेहार लगा हुआ है जिस में पूरी उम्र की क़ज़ा नमाज़ों को चुटकी में मुआफ़ करवाने का तरीका लिखा हुआ था और ताईद में चंद बे असल रिवायात भी लिखी हुई थी....,
मैंने फौरन उस इश्तेहार को वहाँ से हटा दिया और उस के लगाने वाले के मुतल्लिक दरियाफ्त किया लेकिन कुछ मालूम न हो सका।
ऐसा ऑफर देखने के बाद वो लोग जिन की बीस तीस साल की नमाज़ें क़ज़ा है, अपने जज़्बात पर काबू नही कर पाते और असल जाने बिग़ैर इस पर यकीन कर लेते हैं।
इस तरह की बातें बिल्कुल गलत हैं और इन की कोई असल नही है, उलमा -ए- अहले सुन्नत ने इस का रद्द किया है और इसे नाजायज़ क़रार दिया है।

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहिमहुल्लाहू त'आला इस के मुताल्लिक़ लिखते हैं के ये जाहिलों की ईजाद और महज़ नाजायज़ व बातिल है।

(انظر: فتاوی رضویہ، ج7، ص53، ط رضافاؤنڈیشن لاہور)

इमाम -ए- अहले सुन्नत एक दूसरे मकाम पर लिखते हैं के आखिरी जुमु'आ में इस का पढ़ना इख़्तिरा किया गया है और इस में ये समझा जाता है के इस नमाज़ से उम्र भर की अपनी और अपने माँ बाप की भी क़ज़ाये उतर जाती है महज़ बातिल व बिदअत -ए- शनिआ है, किसी मोतबर किताब में इस का असलन निशान नही।

(ایضاً، ص418، 419)

सदरुश्शरिआ, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी रहिमहुल्लाहू त'आला लिखते है के शबे क़द्र या रमज़ान के आखिरी जुमे को जो ये क़ज़ा -ए- उमरी

जमा'अत से पढ़ते हैं और ये समझते है के उम्र भर की क़ज़ाये इसी एक नमाज़ से अदा हो गयी, ये बातिल महज़ है।

(بہار شریعت، ج1، ح4، ص708، قضا نماز کا بیان)

हज़रत अल्लामा शरीफुल हक़ अमजदी अलैहिर्रहमा ने भी इस का रद्द किया है और इस कि ताईद में पेश की जाने वाली रिवायात को अल्लामा मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी अलैहिर्रहमा के हवाले से मौज़ू क़रार दिया है।

(فتاوی امجدیہ، ج1، ص272،273)

अल्लामा क़ाज़ी शमशुद्दीन अहमद अलैहिर्रहमा लिखते है के बाज़ लोग शबे क़द्र या आखिरी रमज़ान में जो नमाज़े क़ज़ा -ए- उमरी के नाम से पढ़ते है और ये समझते है के उम्र भर की क़ज़ाओ के लिए ये काफी है, ये बिल्कुल गलत और बातिल महज़ है।

(قانون شریعت، ص241)

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद वक़ारूद्दीन क़ादरी रज़वी अलैहिर्रहमा लिखते है के बाज़ इलाक़ो में जो ये मशहूर है के रमज़ान के आखिरी जुमे को चंद रकाअत नमाज़ क़ज़ा -ए- उमरी की निय्यत से पढ़ते है और ख़याल ये किया जाता है के ये पूरी उम्र की क़ज़ा नमाज़ो के क़ायम मकाम है, ये गलत है...., जितनी भी नमाज़े क़ज़ा हुई है उन को अलग अलग पढ़ना ज़रूरी है।

(وقار الفتاوی، ج2، ص134)

हज़रत अल्लामा गुलाम रसूल सईदी रहिमहुल्लाहू त'आला लिखते है के बाज़ अनपढ़ लोगो मे मशहूर है के रमज़ान के आखरी जुमा'आ को एक दिन की पांच नमाज़े वित्र समेत पढ़ ली जाए तो सारी उम्र की क़ज़ा नमाज़े अदा हो जाती है और इस को क़ज़ा -ए- उमरी कहते है, ये क़तअन बातिल है।
रमज़ान की खुसूसियत, फ़ज़ीलत और अज्रो सवाब की ज़्यादती एक अलग बात है लेकिन एक दिन की क़ज़ा नमाज़े पढ़ने से एक दिन की ही अदा होगी, सारी उम्र की अदा नही होगी।

(شرح صحیح مسلم، ج2، ص352)

साबित हुआ के ऐसी कोई नमाज़ नही है जिसे पढ़ने से पूरी उम्र की क़ज़ा नमाज़ अदा हो जाये।
ये जो नमाज़ पढ़ी जाती है, इस कि कोई असल नही है, ये नाजायज़ ओ बातिल है।

अब्दे मुस्तफ़ा

ईमान और हुब्बे मुहम्मद ﷺ

हज़रते अल्लामा मौलाना सैय्यद मुहम्मद मदनी अशरफी जीलानी लिखते हैं :
रसूल -ए- करीम ﷺ को चाहना ईमान है, और सबसे ज़्यादा चाहना कमाल -ए- ईमान है।
ये एक मन्सूस हक़ीक़त है जो हर तरह के शुकूको शुबहात से बाला तर है।
ये भी एक अजीब इत्तिफाक़ है कि "अब्जद" के हिसाब से "ईमान" का जो अदद है, बिल्कुल वही अदद "हुब्बे मुहम्मद" ﷺ का भी है।
ईमान का अदद एक सौ दो (102) है और यही अदद "हुब्बे मुहम्मद" ﷺ का भी है।
ते इत्तिफाक़ भी क़ाबिल -ए- दीद है कि जो अदद कुफ्र का है, बिल्कुल वही अदद "हिज्र-ए- मुहम्मद" का भी है।
कुफ्र का अदद है तीन सौ (300) और हिज्र -ए- मुहम्मद" का भी यही अदद है...,
अल गर्ज़ नबी की मुहब्बत ही ईमान है और ईमान ही नबी की मुहब्बत है।

(ملتقطاً: کتاب "یایھاالذین آمنوا" پر تبصرہ، ج1، ص12)

अल्लाह त'आला हमें हक़ीक़ी "हुब्बे मुहम्मद" ﷺ अता फरमाए।

अब्दे मुस्तफ़ा

कोई एक ऐसा दिखाओ

ऐसी कई हस्तियां गुजरीं हैं जिन्हें लाखों, करोड़ों लोगों ने अपना पेशवा, रहनुमा, लीडर और इमाम बनाया लेकिन क्या उन में से कोई एक भी ऐसा दिखाया जा सकता है जिसके करोड़ों चाहने वालों ने अपने मुकतदा से इस कदर मुहब्बत की हो कि उसके सफेद रंग के बालों को भी गिन कर याद रखा हो? नहीं ऐसा कोई नहीं है सिवाए हमारे

नबी पाक ﷺ के, कि जिनके सहाबा ने ये तक रिवायत किया कि आप ﷺ के कितने बाल सफेद रंग के थे!
हजरते अनस रदीअल्लाहु त्आला अन्हु बयान करते हैं कि आप ﷺ के सर में 17 या 18 बाल सफेद थे।

(مسند امام احمد بن حنبل)

मुस्लिम शरीफ में है कि आप ﷺ के थोड़े से बाल दाढ़ी में, थोड़े से कनपटीयों में और थोड़े से बाल सर मुबारक में सफेद थे।

(صحیح مسلم)

बुखारी शरीफ में है कि आप ﷺ के बालों में थोड़ी सी सफेदी होती थी।

(صحیح بخاری)

एक और रिवायत में है कि वफात के वक्त आप ﷺ के बीस बाल भी सफेद नहीं थे।

(ایضاً)

(ملخصاً:شمائل الرسول لابن کثیر،اردو،ص112)

भीनी खुश्बू से महक जाती हैं गलियां वल्लाह
कैसे फूलों में बसाए हैं तुम्हारे गेसू

अब्दे मुस्तफा

लिया है तो दो शोर मचाते क्यों हो

लड़के वालों की तरफ से एक लाख रूपए और एक गाड़ी की माँग की गई है जिसकी वजह से लड़की के घर वालों का चेहरा देखने लाईक़ है।
ये वही लड़के वाले हैं जो चंद सालों पहले लड़के वाले थे।

जब ये लड़के वाले थे तब इन्होंने भी एक लाख रुपए और एक गाड़ी की माँग की थी लेकिन जब आज किसी ने इनसे मांगा है, तो चेहरे पर बारह बजे हुए हैं।
कितनी अजीब बात है ना कि जब लेना था तब ये गलत नहीं था पर जब देने की बारी आई तो ये बुरा लग रहा है।

सच तो ये है कि लेने वाले और देने वाले में कोई फ़र्क़ नहीं है, दोनों ही दौलत के भूखे हैं।
जिन लोगों ने अपने लड़के की शादी में दूसरों का माल लूटा है उन्हें तो इस बात का हक़ ही नहीं है कि अपनी बारी में इस लेन देन को गलत कहें...., और जो लोग आज देकर, कल लेने का ख्वाब देख रहे हैं वो भी इस जुर्म में बराबर के शरीक हैं।
अगर आप वाक़ई इसे गलत समझते हैं तो शुरुआत आपको ही करनी होगी, आप इसके खिलाफ तन्हा खड़े हो जायें और दूसरों के लिए खुद को उम्मीद की एक किरन बना दें।
अगर आप ऐसा नहीं कर सकते तो फिर हम कहेंगे कि "लिया है तो दो शोर मचाते क्यों हो?"

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

पर्सनल सवाल मत कीजिए

किसी से उस के हालात के बारे में सवाल करना या कोई मस'अला पूछना अच्छी बात है लेकिन ज़ाती सवालात करना दुरुस्त नही है।
कुछ लोग बिना सोचे समझे बड़े अजीबो गरीब सवालात पूछ लेते हैं।
हज़रते सलमान फ़ारसी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने जब शादी की और अगले दिन बाहर निकले तो एक शख़्स ने पूछा :
आप कैसे है?
आप ने फरमाया के अच्छा हूँ और अल्लाह का शुक्र अदा करता हूँ।
फिर उस शख़्स ने पूछा :
रात कैसी गुज़री? या पूछा कि आप ने अपनी जौज़ा को कैसा पाया?
ये सुन कर आप ने (ग़ुस्से में) फरमाया : तुम ऐसा सवाल क्यों पूछते हो जिस का जवाब छुपाना पड़े, अल्लाह त'आला ने घरों के पर्दे और दरवाज़े इस लिए बनाए है ताकि अंदर की बात अंदर ही रहे.....,

तुम्हे घर से बाहर की बाते पूछनी चाहिए और सिर्फ ज़ाहिरी उमूर के मुतल्लिक़ पूछना ही काफी है।

(حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء، اردو، ج1، ص349 و قوت القلوب، اردو، ج2، ص20)

एक शख़्स ने हज़रते सुलेमान बिन मेहरान आमश रहिमहुल्लाह से पूछ लिया के : आप ने रात कैसी गुज़ारी?

ये सवाल आप रहिमहुल्लाह को नागवार गुज़रा और आप ने बुलंद आवाज़ से अपनी कनीज़ को पुकारा के बिस्तर और तकिया ले कर आओ....., जब वो ले कर आई तो आप ने फरमाया के इसे बिछा कर लेट जाओ यहाँ तक कि मैं भी तेरे पहेलु में लेट जाऊँ ताकि हम इस (सवाल करने वाले) शख़्स को दिखा सकें के हम ने रात कैसी गुज़ारी है!

आप रहिमहुल्लाह फरमाया करते थे के (आज कल) एक शख़्स अपने दोस्त से मिलता है तो उस से हर शै के मुताल्लीक पूछ डालता है यहां तक के घर मे मौजूद मुर्गी तक कि खैरियत मालूम कर लेता है लेकिन उस का दोस्त उस से एक दिरहम मांग ले तो वो नही देता! जब सलफे सालेहीन आपस मे मिलते तो सिर्फ ये कहेते के आप कैसे है? या फरमाते के अल्लाह त'आला आप को सलामत रखे और अगर उन से कुछ मांगा जाता तो फौरन अता फ़रमा देते।

(ملخصاً: قوت القلوب، اردو، ج2، ص20، 21)

अब्दे मुस्तफ़ा

प्यार करने वालों का निकाह

वैसे तो लड़को और लड़कियों को प्यार, मुहब्बत और इश्क़ के नाम से भी दूर रहना चाहिए लेकिन अगर कोई इस बीमारी में मुब्तला हो जाए तो इश्क़ का इज़हार करने, तोहफा देने, बातें और और मुलाकाते करने के बजाए निकाह की कोशिश करनी चाहिए।

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ का इरशाद है:

لم یر للمتحابین مثل التزوج

दो मुहब्बत करने वालो का हमें निकाह से बेहतर कोई हल नज़र नही आता।
अब चूँकि लड़के और लड़कियों को स्कूल्स, कॉलेजेस और यूनिवर्सिटीज़ में साथ पढ़ाया जाता है तो इस बला में पड़ना लाज़मी है।
अब तो लोग इतने आगे निकल चुके है के लड़कियों को बेपर्दा पढ़ने के लिए भेजना ग़लत ही नही समझते।
लड़को को गाड़ी और स्मार्टफोन के साथ जेब खर्च दे कर माँ बाप अपने आप को अच्छा समझते है, ऐसे हालात में कभी भी आप को अपने बेटे की "गर्लफ्रेंड" और अपनी बेटी के "बॉयफ्रेंड" की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल हो सकता है!
अगर कोई शरई वजह न हो तो बेहतरी इसी में है के फ़ितने को रोकने के लिए इनका निकाह कर दिया जाए, अगर किसी वजह से निकाह न हो सके तो अवलाद को भी चाहिए के जल्दबाज़ी में कोई कदम न उठाए बल्कि सब्र से काम ले।

अब्दे मुस्तफ़ा

अज़ीम नेकी

(दो प्यार करने वालों को मिलाना)

जुबैदा खातून रहीमहल्लाह ने मक्का शरीफ के रास्ते में एक दीवार पर लिखा देखा :

اما فی عباداللہ اوفی امائہ

کریم یجلی الھم عن ذاھب العقل

لہ مقلۃ اما الماٰق قریحۃ

واماالحشافالنار منہ عن رجل

क्या अल्लाह के बन्दों और बांदियों में कोई भी ऐसा सखी नहीं जो उस दीवाना -ए- इश्क़ का गम गलत कर सके जिसके गोशा हाये चश्म ज़ख्म खुरदा हैं और मन की आग क़दमों तक पहुँच रही है।

ज़ुबैदा ने मन्नत मानी कि अगर ये शेर लिखने वाला मुझे मिल गया तो उसे उसके महबूब तक पहुँचा दूंगी।
ये जब मक़ाम -ए- मुज़दलिफा पहुँची तो देखा कि एक शख़्स वही अश'आर गुनगुना रहा है।
इन्होने उससे पूछा तो वो कहने लगा :
"ये अश'आर मैने अपनी चचा ज़ाद के लिये लिखे हैं, जिसके घर वालों ने क़सम खा रखी है कि वो इस का निकाह मेरे साथ नहीं करेंगे।"
ज़ुबैदा खातून ने लड़की के अहले खाना से राबता किया और उन्हें बहुत सारा माल पेश करके निकाह के लिये राज़ी कर लिया। निकाह के बाद मालूम हुआ कि लड़की, लड़के से बढ़कर उससे इश्क़ करती थी।
ज़ुबैदा रहीमहल्लाह अपने इस काम को अज़ीम नेकियों में शुमार किया करती थी और कहती कि मुझे इस कारे खैर से जितनी ख़ुशी मिली, किसी काम से नहीं मिली, मैने दो मुहब्बत करने वालों को जमा कर दिया।

(انظر: الداءوالدواء، ص563، ط دار عالم الفوائد، مکۃ المکرمۃ، س1429ھ)

अल्लाह के रहम दिल बन्दे हमेशा इश्क़ के मुब्तलाओं पे रहम खाते रहते हैं। क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ का फरमान है :

لم یر للمتحابین مثل التزوج

दो मुहब्बत करने वालों का हमें निकाह से बेहतर कोई हाल नज़र नहीं आता।
इस्लाम में बॉय फ्रेंड, गर्ल फ्रेंड जैसे ना जाइज़ रिश्तों का कोई तसव्वुर नहीं, सिर्फ पसन्द के निकाह की तरगीब है।
अगर माने शरयी ना हो (यानी जहाँ शरीअ़त की तरफ से कोई मुमाने'अत ना हो) तो मुहब्बत करने वालों के निकाह में ज़रूर मुआविनात करनी चाहिये, जहाँ ये बड़े अज्रो सवाब का काम है वहीं अज़ीम फितने के सद्दे बाब का ज़रिया भी है।

अल्लामा क़ारी लुक़मान शाहिद

इसे कहते हैं दोस्ती

इमाम गज़ाली रहीमहुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि एक शख्स अपने दोस्त के पास गया और उसका दरवाज़ा खटखटाया, दोस्त ने पूछा कि कैसे आना हुआ?
इसने कहा कि मुझ पर 400 दिरहम क़र्ज़ हैं.......,
दोस्त ने 400 दिरहम इसके हवाले कर दिए और रोता हुआ (घर के अन्दर) वापस आया!
बीवी ने कहा कि अगर दिरहमों से तुझे इतनी मुहब्बत थी तो दिए क्यों?
उसने कहा कि मै तो इसलिये रो रहा हूँ कि मुझे अपने दोस्त का हाल उसके बताये बगैर क्यों ना मालूम हो सका हत्ता कि वो मेरा दरवाजा खटखटाने पर मजबूर हो गया।

(انظر: احیاء العلوم الدین، اردو، ج3، ص843)

इमाम गज़ाली मज़ीद लिखते हैं कि दोस्ती को निकाह के ताल्लुक़ की तरह तसव्वुर करना चाहिये क्योंकि इसमें भी हुक़ूक़ हैं।
जो चीज़ ज़रूरत और हाजत से ज़ायिद हो उसे बिना माँगे अपने दोस्त को दे दे, अगर उसे माँगने और कहने की नौबत आये तो ये दोस्ती के दर्जे से खारिज है!

(ملخصاً: کیمیائے سعادت، اردو، ص291)

दोस्ती सिर्फ टाइम पास करने का खिलौना नहीं है कि जब जी चाहा खेला और ज़रूरत पूरी होने पर फेंक दिया बल्कि ये बहुत प्यारा रिश्ता है।
इस रिश्ते को निभाना भी हर किसी के बस की बात नहीं.......,
दोस्त की ज़रूरत को महसूस करने का नाम दोस्ती है, अगर हमारे पास माल है और दोस्त को ज़रूरत है तो उसके मुँह खोलने से पहले दे देने का नाम दोस्ती है।
इस ज़माने में ऐसे दोस्त बहुत कम मिलते हैं जो इस रिश्ते की अहमियत को समझते हैं, शायद मै भी उनमें से नहीं। हमारे दोस्तों की तादाद तो सैकड़ों में है लेकिन क्या हमने किसी एक से भी अच्छी तरह दोस्ती निभाई है?
इस सवाल का जवाब देने से पहले मैने गुज़रे हुए दिनों को याद किया तो कोई ऐसी बात नज़र नहीं आई कि मैं जवाब में "हां" कह सकूं........!!!

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

औरत की मुहब्बत

मेरे पास एक अफसुर्दा (उदास) शख्स तावीज़ात के लिये आया और कहने लगा कि मैने पसंद की शादी की थी, लेकिन मेरी अहलिया ने ज़बरदस्ती तलाक़ ले ली हालांकि उसने हमेशा साथ निभाने का पक्का वादा किया था और क़समें भी खायी थी......., अब मै उसके बिगैर रह नहीं सकता, मेरा कोई हल निकालें।

मैने तसल्ली देते हुये कहा कि आप का हल निकालता हूँ, लेकिन उससे पहले मेरी बात सुन लें!

हज़रते आतिका बिन्ते ज़ैद का निकाह हज़रते अब्दुल्लाह बिन अबू बकर सिद्दीक़ से हुआ था, आप उनसे बे हद मुहब्बत करते थे, उनकी जुदाई बिल्कुल बरदाश्त ना करते, इसी वजह से जब बाज़ जंगों में शरीक ना हो सके तो सैय्यिदुना सिद्दीक़ -ए- अकबर ने कहा कि अपनी बीवी को तलाक़ दे दो!

आपने वालिद की इता'अत में ना चाहते हुये भी तलाक़ (रजयी) तो दे दी, लेकिन शिद्दत -ए- मुहब्बत में अश'आर पढ़ते रहते थे।

एक दिन सैय्यिदुना सिद्दीक़ -ए- अकबर ने सुना, वो कह रहे थे :

ए आतिका! मै तुझे उस वक़्त तक नहीं भूलूँगा जब तक मशरिक़ से रौशनी निकलती रहेगी और तौक़ दार क़ुमरी (एक परिन्दा) कू कू करती रहेगी।

ए आतिका! हर दिन रात मेरा दिल तुझे याद करता है, उन जज़्बात की वजह से जो मेरे अंदर छुपे हैं।

ये अश'आर सुनकर सैय्यिदुना सिद्दीक़ -ए- अकबर पर रिक़्क़त तारी हो गई और आपने फरमाया : (तलाक़) से रुजू कर लो!

कुछ अर्से बाद जब हज़रते अब्दुल्लाह रदिअल्लाहु त'आला अन्हु शहीद हो गये तो हज़रते आतिका ने उनका मरसिया कहा, जिसका एक शेर ये था :

فآلیت لاتنفک عینی حزینۃ

علیک، ولا ینفک جلدی اغبرا

मैने क़सम खायी है कि मेरी आँखें आप पर हमेशा रोयेंगी और मेरा बदन गुबार आलूद रहेगा।

फिर सैय्यिदुना उमर फारूक़ ने हज़रते आतिका को पैगाम -ए- निकाह भेजा, जिसे आप ने क़बूल कर लिया।
वलीमे पर हज़रते अली भी मौजूद थे, आप कहने लगे कि अमीरुल मोमिनीन! इजाज़त दें मै आतिका से बात करना चाहता हूँ। इजाज़त मिलने पर आपने दरवाज़े की औट में खड़े होकर कहा :

یاعدیۃ نفسھا این قولک

ए अपनी जान की दुशमन, तेरा ये क़ौल कहाँ गया कि "(ए अब्दुल्लाह) मैने क़सम खायी है कि मेरी आँखें आप पर हमेशा रोयेंगी और मेरा बदन गुबार आलूद रहेगा।"
ये सुनकर हज़रते आतिका रो पड़ी।
सैय्यिदुना उमर कहने लगे :
ए अबुल हसन! आपको ये बात दोहराने की क्या ज़रूरत पेश आ गयी?

کل النساء یفعلن ھذا

सारी औरतें इसी तरह करती हैं।

(انظر:اسد الغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ،باب العین،ج5،ص337،ر7088،دارالمعرفۃ بیروت)

मैने कहा कि इसमें हमारे लिये बहुत कुछ सबक़ है!
औरत के बहते आँसू और मुहब्बत भरे अल्फाज़ पर बहुत ज़्यादा एतिमाद करने के बजाये अक़्लो समझ से काम लेते हुये, अपने आपको क़ाबू में रखना चाहिये।
दाना कहते हैं :
1. खाना जब तक हज़म ना हो जाये उसकी तारीफ नहीं करनी चाहिये।
2. दोस्त से जब तक क़र्ज़ ना माँग लें उस पर भरोसा नहीं करना चाहिये।
3. और औरत के मरने से पहले तारीफ़ नहीं करनी चाहिये।

(انظر:المستطرف فی کل فن مستظرف،الباب الثانی فی العقل والذکاء،ص20،ط دارالکتب العلمیۃ بیروت،س1436ھ)

क्योंकि खाना, हज़म होने से पहले पेट और मादा भी खराब कर सकता है, इसलिये क़ाबिल -ए- तारीफ उसी वक़्त होगा जब हज़म हो जाये।

और बातों बातों में दोस्ती के दावे हर कोई कर सकता है, लेकिन जब दोस्त से क़र्ज़ माँगा जाये तो मालूम होता है कि वो कितना मुख्लिस है।
और औरत ज़िन्दगी में किसी मोड़ पर भी वफ़ा बदल सकती है, इसलिये मरने से पहले तारीफो तौसीफ़ से परहेज़ करना चाहिये।
आज कल हमारे नौजवानों की एक तादाद औरतों की डसी हुयी है, अल्लाह पाक उनके हाल पर रहम फरमाए।
बे इंतिहा मुहब्बत सिर्फ और सिर्फ रसूल -ए- पाक ﷺ से करें, बाक़ी सब मुहब्बतें झूठी हैं।

अल्लामा क़ारी लुक़्मान शाहिद

बेटी और स्मार्टफोन

बेटी की ज़िद है के उसे स्मार्टफोन चाहिए और क्यों ना हो कि उस के साथ कॉलेज में पढ़ने वाली अक्सर सहेलियों के पास स्मार्टफोन्स हैं।
माँ बाप ने शुरू में तो मना किया लेकिन फिर वही किया जो अपनी लाडली बेटी के साथ हमेशा से करते आए हैं।
अब बेटी के हाथ मे स्मार्टफोन है..., सहेलियों से फ़ोन पे बाते हो रही है..., अरे ये क्या! अब तो बेटी का फेसबुक और व्हाट्सएप्प पर खाता (एकाउंट) भी खुल गया है! धिरे धिरे इंटरनेट की दुनिया की तरफ क़दम भी बढ़ रहे है और बिल आखिर अब प्यारी बेटी भी स्मार्टफोन की तरह स्मार्ट बन चुकी है।
क्या ये खुशी की बात नही के अब स्मार्ट बेटी अपने माँ बाप के सामने किसी से भी चैटिंग (बात चीत) कर सकती है।
माँ बाप को सिर्फ ये दिख रहा है के बेटी मोबाइल स्क्रीन पर उंगलिया चला रही है लेकिन उन्हें इस बात की खबर नही के उन की बेटी घर मे होने के बावजूद भी एक बहुत बड़ी महफ़िल में शामिल है

आज तो हद्द ही हो गयी, स्मार्ट बेटी ने निकाह के लिए लड़का भी ढूंढ लिया है और ज़रूरत है तो बस घर वालो के "हाँ" की,
अगर आज सख़्ती से काम लिया तो बेटी ख़ुदख़ुशी (सुसाइड) भी कर सकती है या लड़के के साथ भाग भी सकती है लिहाज़ा लाड़ली बेटी के साथ वही सुलूक किया जाए जो आप हमेशा से करते आए हैं।
आप नाराज़ क्यों है? अब तो जश्न (सेलिब्रेशन) का वक़्त है, आप ही कि मेहनत तो रंग लाई है।
आप ने स्मार्टफोन के साथ बेटी को कॉलेज का रास्ता दिखाया तो आज आप का नाम रौशन हुआ है और आप है के नाराज़ है...,
ओ हो ये क्या, लड़की का भाई भी ग़ुस्से में लाल पीला हो रहा है जब कि उसे तो ख़ुश होना चाहिए था, वही तो लड़की को अपनी गाड़ी पर बैठा कर कॉलेज ले जाया करता था, कम से कम उसे तो ख़ुश होना चाहिए था
चलिए जाने दीजिए अब छोटी बेटी को स्मार्टफोन दिलाने का वक्त आ गया है......,

अब्दे मुस्तफ़ा

यू ट्यूब या गुमराही ट्यूब

स्मार्ट फोन का इस्तिमाल करने वाले बेश्तर लोग जानते हैं कि यू ट्यूब क्या है लिहाज़ा इस बारे में ज़्यादा लिखने की ज़रूरत नहीं है।
शॉर्टकट में इतना जान लीजिये कि ये एक वेबसाईट है जो वीडियोज़ के लिये बनायी गई है।
इसमें कोई भी कहीं से भी वीडियोज़ रिकॉर्ड करके अपलोड कर सकता है और फिर शेयरींग के ज़रिये कई लोगों तक पहुँचा सकता है।

यू ट्यूब ने कई लोगों को काफी फाइदा दिया है, जिन लोगों को मुश्किल से उनके मुहल्ले वाले भी नहीं जान पाते आज यू ट्यूब की वजह से वो लाखों लोगों में मशहूर हैं, ये अलग सी बात है कि उन्होंने किस तरह की वीडियोज़ से शोहरत हासिल की।

देहात में एक तक़रीर करने वाले को ज़्यादा से ज़्यादा कितने लोग जान पाते लेकिन ये यू ट्यूब ही है कि उन्हें "इन्टरनेशनल" लेवल पर मशहूर कर दिया।
इससे आप हज़ारों किलोमीटर दूर रहने वाले किसी आलिम की तक़रीर को फ़्री में सुन सकते हैं!
ये तो हुयी एक फायदे की बात लेकिन इसके साइड इफेक्ट्स को देखकर ऐसा लगता है कि ये यू ट्यूब नहीं बल्कि "गुमराही ट्यूब" है। एक शख़्स ने यू ट्यूब खोला और तक़रीर सुननी शुरू कर दी, उसे पता ही नहीं कि तक़रीर करने वाला किस ग्रुप से ताल्लुक़ रखता है और उसके नज़रियात कैसे हैं!
फिर धीरे धीरे उसकी बातें अच्छी लगने लगी, अब वो जो भी कहता है इसके लिये हर्फ -ए- आखिर होता है और वो शख़्स इस तरह गुमराही के कुएँ में जा गिरता है!
मेरे एक दोस्त जो लोगों को नेकी की दावत भी दिया करते हैं और बड़े अच्छे अखलाक़ के मालिक हैं, एक दिन इसी यू ट्यूब के ऊपर गुफ्तगू चल रही थी तो उन्होंने एक मुक़र्रिर का नाम लेते हुये कहा कि फुलाँ साहिब भी बहुत अच्छा बयान करते हैं..., मैं तो फुलाँ साहिब का नाम सुनकर बिल्कुल हैरान हो गया क्योंकि उनका ताल्लुक़ एक गुमराह फिरक़े से है! पाकिस्तान के रहने वाले हैं और अपनी इमोशनल एक्टिंग के लिये जाने जाते हैं।
जब मैने अपने दोस्त को ये बताया तो थोड़ी देर के लिये उनकी आंखें बड़ी हो गयी फिर उन्होंने आयिन्दा से फुलाँ साहिब के बयानात ना सुनने का अहद किया।
ना जाने कितने लोग इस यू ट्यूब की वजह से गुमराह हुये हैं।
नौजवानों का एक बहुत बड़ा तबक़ा इस दलदल में फँस चुका है जिनके निकलने की कोई राह नज़र नहीं आती!
अगर आप यू ट्यूब का इस्तिमाल करते हैं तो बहुत ही एहतियात के साथ करें, उलमा -ए- अहले सुन्नत के इलावा किसी का बयान ना सुनें।
कहीं ऐसा ना हो कि ये यू ट्यूब आपके लिये गुमारही ट्यूब बन जाये।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

मुझे पापड़ नहीं मिला

बारातियों को अच्छा खाना खिलाने के चक्कर में लड़की वाले क़र्ज़े में डूब गये लेकिन कुछ बारातियों को अभी भी शिकायत है कि उन्हें पापड़ नहीं मिला!
कुछ लोगों का कहना है कि उन्हें सलाद और मछली की ज़ियारत नसीब नहीं हुई।
वलीमा की दावत में लाखों रुपये खर्च हो गये मगर अफ़सोस कि पापड़, सलाद औए मछली वग़ैरा का मस'अला हल नहीं हो पाया!
अभी अगर आप दो तीन सौ लोगों को खाने की दावत देते हैं तो ये भूल जाइये कि आप सबको अच्छी तरह खिला पायेंगे!
अच्छी तरह का मतलब ये नहीं कि जो आप को अच्छा लगता है बल्कि इसका मतलब वो बतायेंगे जिन्हें पापड़ नहीं मिलेगा! मेज़बान अगर अपना कलेजा निकालकर मेहमानों को तक़सीम कर दे तो हाल ये है कि कुछ लोग खाने के बाद कहेंगे कि : कलेजा तो दे दिया लेकिन सहीह से पका नहीं था!
क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि ऐसा होने की वजह क्या है? आइये हम अपको बताते हैं कि आखिर ऐसा क्यों होता है :
इसकी बुनियादी वजह है खाने में तकल्लुफ़ यानी लोगों को वो खिलाना जो आप खुद नहीं खाते, आप जो खाते हैं उससे ज़्यादा क़ीमती खाने का इन्तिज़ाम करना।
हमारे अस्लाफ का तर्ज़े अमल ये था कि वो खाने में तकल्लुफ़ को पसन्द नहीं करते थे, चुनान्चे :
एक बुज़ुर्ग फरमाते हैं कि मुझे इसकी कोई परवाह नहीं कि मेरे भाइयों में से मेरे पास कौन आता है क्योंकि मैं उनके लिये तकल्लुफ़ नहीं करता, खाने को जो कुछ होता है पेश कर देता हूँ।
अगर मैं उनके लिये तकल्लुफ़ से काम लूँ तो उनका आना मुझे बुरा लगेगा।

(احیاء العلوم)

ये जुमला क़ाबिल -ए- गौर है कि "अगर मैं उनके लिये तकल्लुफ़ से काम लूँ तो उनका आना मुझे बुरा लगेगा।"
आज अगर कुछ लोग मेहमान को बोझ समझते हैं तो उसकी वजह भी तकल्लुफ़ है।

एक बुज़ुर्ग ने तो जब अपने दोस्त को तकल्लुफ़ करता देखा तो कहने लगे कि आम हालात में ना तो तुम ऐसा खाना खाते हो और ना मैं, तो फिर इकट्ठा ऐसा खाना क्यूँ खायें? या तो तुम ये तकल्लुफ़ छोड़ दो या मै तुमसे मिलना छोड़ दूँ।

(احیاء العلوم)

हज़रते सलमान फारसी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं कि नबी -ए- करीम ﷺ ने हमें हुक्म दिया कि जो चीज़ हमारे पास नहीं उसके बारे में हम मेहमान के लिये तकल्लुफ़ ना करें और जो कुछ मौजूद हो पेश कर दें।

(التاریخ الکبیر للبخاری)

हज़रते फुज़ैल बिन अयाज़ फरमाते हैं कि लोगों ने तकल्लुफ़ की वजह से मिलना छोड़ दिया है कि उनमें से एक अपने एक भाई की दावत करता है और तकल्लुफ़ से काम लेता है जिसकी वजह से वो दोबारा इसके पास ना आता।

(احیاء العلوم)

इमाम गज़ाली अलैहिर्रहमा ने हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के मुतल्लिक़ लिखा है कि जब आपको दावत दी जाती तो आप फरमाते की मैं तीन शराइत के साथ तुम्हारी दावत क़बूल करूँगा।

(1) तुम बाज़ार से कोई नयी चीज़ नहीं लाओगे।

(2) घर में जो कुछ हो वो सारा पेश नहीं करोगे।

(3) अपने अहलो अयाल को भूखा नहीं रखोगे।

(ایضاً)

हम तकल्लुफ़ में इतना बढ़ चुके हैं कि अब इसे ज़रुरी समझने लगे हैं।
इसी वजह से हम लाखों रुपये लुटाने के बाद भी शिकायतें सुनते हैं, अगर हम सादगी अपनायें तो नताइज कुछ और होंगे।

अब्दे मुस्तफ़ा

आप क्या पढ़ते हैं?

जिस तरह खाने से पहले ये देखना ज़रूरी है कि खाना तबीअ़त के मवाफिक़ है या नहीं, इसी तरह कुछ पढ़ने से पहले ये देखना भी ज़रूरी है कि उसको लिखने वाला अक़ीदे के मवाफिक़ है या नहीं।

अगर आप किसी गुमराह शख्स की लिखी हुई बातों को पढ़ते हैं तो ये आपके अक़ीदे के लिये काफी खतरनाक साबित हो सकता है!

ऐसे कई लोगों की मिसालें पेश की जा सकती हैं जिन्होने खुद पर भरोसे के सहारे बद मज़हबों की किताबों के समुन्दर में कश्ती चलाने की कोशिश की लेकिन दुनिया ने देखा कि उनकी कश्ती ऐसी डूबी कि उन्हें खबर तक ना हुई।

लोगों के लिये ये बिल्कुल जाइज़ नहीं कि बद मज़हबों की किताबें या तहरीरें पढें क्योंकि मुम्किन है उनकी कोई बात आपके दिल में जगह बना ले फिर धीरे धीरे पूरे दिलो दिमाग पर क़ब्ज़ा कर बैठे।

शैख मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी (मुतवफ्फ़ा 638 हिजरी) लिखते हैं कि हज़रते सैय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह याबूरी इश्बीली का शुमार औलिया में होता है, एक रात आप ऐसी किताब पढ़ रहे थे जो इमाम गज़ाली अलैहिर्रहमा के रद्द पर लिखी गई थी कि बीनाई (आँखों की रौशनी) चली गई!

आपने फौरन बारगाह -ए- खुदावन्दी में सजदा रेज़ होकर गिरया वज़ारी की और क़सम खाई कि आइन्दा कभी भी इस किताब को ना पढ़ूंगा, इसे अपने आप से दूर रखूँगा तो उसी वक़्त बीनाई वापस लौट आयी।

(روح القدس فی مناصحة النفس به حواله کشف النور عن الاصحاب القبور مع الحديقة الندية، ج2، ص8، وتقديم احياء العلوم، ج1، ص75، طمكتبة المدينة كراچی)

बद मज़हबों की किताबें हरगिज़ ना पढें और ना तो उनकी तक़रीरें सुने।

आज कल कुछ लोग जिन्हें अपने अक़ाइद का सहीह से इल्म नहीं वो भी बद मज़हबों का रद्द करने के लिये उनकी किताबें पढ़ते हैं! जान लीजिये कि ये बिल्कुल जाइज़ नहीं!

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

मक़सूद -ए- काइनात और एक रिवायत

कुछ दिनों पहले एक शेर को लेकर दो गिरोहों में काफी बहसो तकरार हुई, वो बेदम शाह वारसी का ये शेर था:

बेदम यही तो पाँच हैं मक़सूद -ए- काइनात

खैरुन्निसा हुसैनो हसन मुस्तफ़ा -ओ- अली

एक ग्रुप ने कहा कि ये शेर दुरुस्त नहीं है क्योंकि मक़सूद -ए- काइनात सिर्फ हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ की ज़ात -ए- गिरामी है और दूसरे ने कहा कि इसमें कोई क़बाहत नहीं है।

दोनों तरफ से तहरीरों और तक़रीरों का सिलसिला शुरु हुआ जिसमें राफज़ियत और खारजियत के फतवे भी जारी किये गये!

सिह्हत -ए- शेर का इंकार करने वालों को किसी ने अहले बैत का दुश्मन क़रार दिया तो दूसरी तरफ हिमायत करने वालों को राफज़ियत और शिय्यत का दलाल कहा गया!

इस इफरात व तफरीत के माहौल से दूर एक मुअ़तदिल मिज़ाज रखने वाली जमा'अ़त ने इस्लाह की भरपूर कोशिश की लेकिन कुछ लोगों के सर पर ऐसा भूत सवार है जो किसी की सुनने ही नहीं देता।

जब दोनो तरफ से गोलियाँ चल रही थी तो अपनी फतह का झंडा बुलन्द करने के चक्कर में कुछ लोगों ने ये भी नहीं देखा कि हम जो गोलियाँ चला रहे हैं वो कहाँ से ली गई हैं।

हमारे कहने का मतलब ये है कि दोनों तरफ से दलाईल पेश किये जा रहे थे लेकिन इसमें बाज़ लोगों ने इधर उधर की बातों को भी दलील बनाकर अपना उल्लू सीधा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

मिसाल के तौर पर इस शेर को दुरुस्त कहने वालों में से बाज़ ने शियों की घढ़ी हुई रिवायात को भी नहीं छोड़ा।

अपने पलड़े को भारी करने के लिये ऐसी रिवायात को बयान किया गया जो मज़हब -ए- शिया की तर्जुमानी करती हैं।

एक रिवायत कुछ इस तरह है कि:

रिवायत है कि जब अल्लाह त'आला ने हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया और उनके जिस्म में रुह डाली तो हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने अर्श की दाहिनी तरफ निगाह उठाकर देखा कि पंजतन पाक का नूर रुकूअ़ और सुजूद कर रहा है। हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने उनके मुतल्लिक़ अर्ज़ किया तो अल्लाह त'आला ने फरमाया कि ये तेरी औलाद में से पाँच शख्स हैं, अगर ये (पाँचों) ना होते तो मै जन्नत, दोजख़, अर्श, कुर्सी, आसमान, ज़मीन, फिरिश्ते और इंसान वगैरा किसी को पैदा ना करता....अलख

इस रिवायत का हवाला देते हुये कुछ किताब का नाम भी लिया जाता है, मस्लन एक मुक़र्रिर साहब ने कहा कि इस रिवायत को पीर मेहरे अली शाह ने अपनी किताब "मेहरे मुनीर" में लिखा है और इसे शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी की तरफ मंसूब किया है।

पहली बात तो ये है की "मेहरे मुनीर" नामी किताब पीर महरे अली शाह अलैहिर्रहमा की तस्नीफ़ नहीं है बल्कि मौलाना फैज़ अहमद साहब (खतीब दरगाहे गौसिया मेहरिया) की है।

ये किताब पीर मेहरे अली शाह की सवानेह हयात पर मुश्तमिल है।

इस में ये रिवायत एक दूसरी किताब से नक़्ल की गयी है जिसका नाम "अर्जहुल मतालिब" है, इसी किताब "अर्जहुल मतालिब" के हवाले से और भी बाज़ लोगों ने इस रिवायत को नक़्ल किया है। बाज़ लोग ये समझते हैं कि "अर्जहुल मतालिब" अहले सुन्नत की मुअ़तबर किताब है लिहाज़ा अब ज़रा एक नज़र इस किताब पर डालते हैं ताकि मालूम हो जाये कि ये अहले सुन्नत के नज़दीक कितनी मुअ़तबर है।

"अर्जहुल मतलिब" पर एक नज़र:

ये किताब मौलवी उबैदुल्लाह अमृतसरी की है जो कि सुन्नी नहीं बल्कि तक़िया बाज़ शिया था इसी किताब में दर्ज ज़ेल बातें भी मौजूद हैं:

(1) जो औरत हज़रते अली से बुग्ज़ रखे उसे पखाने की राह से हैज़ का खून आता है।

(2) हुज़ूर ﷺ ने फरमाया कि मै और अली एक नूर से हैं।

(इससे शियों का अक़ीदा साबित होता है।)

(3) हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ से बाग -ए- फिदक के मुआमले में इज्तिहादी खता हुई।

(4) शैख़ैन से बा तकाज़ा -ए- बशरियत उमूर -ए- शरीअ़त में गलती हो जाया करती थी और हज़रते अली से गलती का सुदूर मुम्किन नहीं था।
(इससे अस्मत का अक़ीदा साबित होता है, शियों का अक़ीदा है कि हज़रते अली मासूम हैं)
(5) मुहम्मद बिन सिरीन कहा करते थे कि अगर वो क़ुरआन मिल जाता जो हज़रते अली ने जमा किया था तो उससे बहुत इल्म हासिल होता।
(इससे भी शियों का अक़ीदा साबित होता है कि क़ुरआन मुकम्मल नहीं)
(6) हुज़ूर ﷺ ने फरमाया कि अली ख़ैरुल बशर हैं, जिसने इंकार किया वो काफिर हुआ।
(7) हुज़ूर ﷺ से सवाल किया गया कि शबे मेराज अल्लाह त'आला ने आपसे किस आवाज़ में कलाम किया था तो आप ﷺ ने फरमाया कि अली की आवाज़ के साथ।
(ये भी अक़ाइद -ए- शिया की तर्जुमानी करती है।)
(8) अल्लाह त'आला ने अपने फरिश्तों को अली के मुँह के नूर से पैदा फरमाया।
(9) हज़रते फातिमा का निकाह फरिश्तों की गवाही से हुआ।

(دیکھیے ارجح المطالب یعنی سیرت امیر المومنین)

इसके इलावा और भी कई इबारात हैं जो अहले सुन्नत के बुनियादी अक़ाइद के खिलाफ हैं लिहाज़ा ये हमारे नज़दीक मुअ़तबर नहीं और इसके हवाले अहले सुन्नत पर हुज्जत नहीं हो सकते।

(انظر: میزان الکتب، ص441تا460)

मुल्के पाकिस्तान के एक मशहूर खतीब ने इस रिवायत को बयान करके जब हवाले देने शुरु किये तो रफ्तार में ये भी कहते हुये निकल गये कि इमाम -ए- अहले सुन्नत आला हज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला ने भी इसे नक़्ल किया है.....!!! उन्होने किताब का नाम ही नहीं बताया और बताते भी कैसे, जब ऐसी कोई किताब ही नहीं थी।
इस रिवायत को सहीह साबित करने के लिये कुछ तफसीर की किताबों का भी हवाला दिया जाता है हालांकी कुतुब -ए- तफ़ासीर में मौजूद रिवायात के हालात अहले इल्म हज़रात बा खूबी जानते हैं, ऐसे हवाले पेश करने से कोई फाइदा नहीं।

इससे मिलती जुलती एक रिवायत यूँ बयान की जाती है कि नबी ए करीम ﷺ से सवाल किया गया: या रसूलल्लाह! हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने किन कलिमात के ज़रिये तौबा की थी? तो आप ﷺ ने इरशाद फरमाया :

اللهم اغفر لی بحق محمد و علی و فاطمة و حسن و حسين

यानी ए अल्लाह मुझे इन पाँचों (मुहम्मद ﷺ, अली, फातिमा, हसन और हुसैन रदिअल्लाहु त'आला अन्हुम) के वसीले से बख्श दे।

इस रिवायत को इमाम इब्ने जौज़ी ने "अल मौज़ूआत" में दाखिल किया है और इमाम दारक़ुतनी, यह्या बिन मुईन और इमाम इब्ने हिब्बान के अक़वाल को भी नक़्ल किया है जिससे ये वाज़ेह होता है कि ये रिवायत सहीह नहीं है।

इसके अलावा अबू ज़ुर'आ, अबू हातिम, अबू मामर, इब्ने अदी वगैरा ने इसके रावियों पर जिरह की है।

(انظر: الموضوعات لابن جوزی، ج2، ص3، ط المكتبة السلفية بالمدينة المنورة، وفيه حسين الاشقر، قال ابوزرعة: منكر الحديث، و قال ابو حاتم: ليس بقوی، و قال الجوزجانی: غال شتام للخيرة، و قال ابو معمر الهذلی: كذاب، و قال النسائی والدار قطنی: ليس بالقوی "الميزان" و قال الذهبی فی الترتيب: عمر ليس بثقة، و قال ابن عراق فی التنزيه: واخرجه ابن انجار من طريق محمد بن علی بن خلف العطار من هذا الضرب عجائب و هو منكر الحديث والبلاء فيه عندی منه لا من حسين)

हमारी इस पूरी बहस का मक़सद सिर्फ ऐसी रिवायात का रद्द करना है जो शियों की घढ़ी हुई हैं और उनके मज़हब को तक़्वियत पहुँचाती हैं ना कि ये साबित करना कि बेदम शाह वारसी का मज़कूरा शेर दुरुस्त है या नहीं?

فَاعْتَبِرُوْا يٰۤاُولِی الْاَبْصَار

अब्दे मुस्तफ़ा

लेन देन

निकाह में लेन-देन एक आम बात हो गयी है। बिना किसी झिजक के कहा जाता है कि हमें इतने पैसे और फुलाँ फुलाँ समान चाहिये।

एक कम पढ़ा लिखा शख़्स भी अगर इंसाफ की नज़रों से देखे तो उसे इस लेन देन की खराबियाँ नज़र आ जायेंगी।

इमाम अबू तालिब मक्की अलैहिर्रहमा (मुतवफ्फ़ा 386 हिजरी) लिखते हैं कि निकाह करने वाले के लिये ये मुनासिब नहीं है कि वो ये मालूम करे कि औरत को निकाह में ब तौर -ए- जहेज़ क्या मिलेगा और ना उसके लिये ये जायज़ है कि उसे कुछ इसलिये दे ताकि इसे ज़्यादा मिले और लोगों के लिये भी जायज़ नहीं कि उसे कुछ हदिया करें और उसको इससे ज़्यादा क़ीमती चीज़ देने पर मजबूर करें।

शौहर के लिये रवा है कि अगर इनका इरादा मालूम हो जाये तो इनका हदिया क़बूल ना करे क्योंकि ये सब निकाह की बिद'अत हैं और ये निकाह में तिजारत की मानिन्द है जो सूद में दाखिल है, जुआ के मुशाबे है और जिसने इस निय्यत के साथ इस तरह निकाह किया या कराया तो ये निय्यत फासिद है और इसका ये निकाह ना दीन के लिये है ना आखिरत के लिये!

हज़रते सुफयान सौरी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं कि जब कोई शख़्स निकाह करते वक़्त ये पूछता है कि औरत क्या लायेगी तो समझ लो कि वो चोर है लिहाज़ा उसके साथ निकाह मत करो।

[आज तो मांग की जाती है कि ये और वो होना चाहिये वरना निकाह नहीं होगा तो ऐसे लोगों को चोर से भी बदतर समझा जा सकता है]

(قوت القلوب، ج2، ص478، ط برکات رضا گجرات بہ حوالہ مہر اور جہیز، ص26)

अब्दे मुस्तफ़ा

क्या हाल चाल हैं?

इमाम अबु तालिब मक्की अलैहिर्रहमा (अलमुतवफ्फा 386 हिजरी) लिखते है के पहले ज़माने में जब लोग आपस मे मिलते तो एक दूसरे से पूछते : क्या हाल चाल हैं? इस से मुराद ये पूछना होता के "मुजहिदा, सब्र में अपने नफ़्स के मुताल्लिक़ और ईमान व इल्मे यकीन में ज़्यादती की हालत के मुतल्लिक़ कुछ बताएं" बसा अवक़ात वो ये मुराद लेते के "परवरदिगार -ए- अज़्ज़वजल से अपने मुआमले की खबर दीजिये" और ये भी बताएं के "दुनिया व आख़िरत के उमूर की अंजाम देही में आप की हालत कैसी

है? उन में ज़्यादती है या कमी?" इस तरह वो अपने दिलो के अहवाल का तज़किरा करते, और इस बात का भी ज़िक्र करते के अल्लाह त'आला ने उन्हें हुस्ने मुआमला की दौलत अता फरमाई और उन के लिए कैसे कैसे मफाहीम अयाँ (ज़ाहिर) किये, इस से उन का मक़सूद महज़ इनाम -ए- बारी त'आला को शुमार करना और उस पर शुक्र बजा लाना होता के उन का ये अमल उन के लिए मारिफ़त व हुस्ने मुआमला में ज़्यादती का सबब बन जाये।

आज कल लोग एक दूसरे से मिल कर हाल चाल मालूम करते है तो उन की मुराद उमूर -ए- दुनिया और असबाब -ए- हिर्स व हवा के मुताल्लिक़ पूछना होता है, इस के बाद बन्दा शिकायत और नाराज़गी का इज़्हार करता है, यूँ वो अपने नफ़्स के साथ साथ अपनी बद आमालिया तक को भूल जाता है।

(قوت القلوب، اردو، ج2، ص14، ملخصاً وملتقطاً)

अब मौजूदा ज़माने में तो हाल चाल से यही मुराद लिया जाता है के काम कैसे चल रहा है?, बीवी बच्चे कैसे है?, तिजारत में फायदा हुआ या नही?, नौकरी मिली या नही?, या फिर गाड़ी खरीदी या नही?

बहुत कम लोग ऐसे बचे है जो किसी से ये जानने के लिए हाल चाल पुछते हो के तुम्हारे और रब के दरमियान का मुआमला कैसा है? उलूम पर कामयाबी मिल रही है या नही? नफ़्स से जंग की क्या कैफियत है?

कितना अच्छा होता जो हम एक दूसरे से हाल चाल सिर्फ इसी लिए पूछते ताकि अपने अपने दिलो के हालात को बयान कर सके, मुख्तलिफ कैफियात पर तबादिला -ए- खयाल कर सके और एक दूसरे के लिए आख़िरत की तैयारी में आसानी की दुआ कर सके...,

ए काश ऐसा हो...,

अब्दे मुस्तफ़ा

क्या आप भी जवाब देते हैं?

हज़रते सय्यिदुना अबु हफ़्स निशापुरी अलैहिर्रहमा खुरासान में हज़रते जुनैद बगदादी अलैहिर्रहमा जैसे मकाम के हामिल थे।

आप फरमाते हैं के आलिम वो होता है जिस से कोई दीनी मस'अला पूछा जाए तो वो ग़मज़दा हो जाए यहाँ तक के अगर उसे ज़ख्मी किया जाए तो (सही जवाब देने के) खौफ के बाइस उस के जिस्म से खून ना निकले और उसे ये डर लाहिक हो के दुनिया मे पूछे गए इस सवाल के मुताल्लिक़ आखिरत में उस से पूछा जाएगा, नीज़ वो इस वजह से भी ख़ौफ़ज़दा हो के सवाल का जवाब देने से बच नही सकता क्योंकि उलमा -ए- किराम के फुक़दान की वजह से उस पर जवाब देना फ़र्ज़ हो चुका है, यही वजह है कि सय्यिदुना इब्ने उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हु दस में से सिर्फ एक सवाल का जवाब देते और फरमाया करते थे के तुम हमे जहन्नम का पुल बना कर उस पर से ये कहते हुए गुज़रना चाहते हो के इब्ने उमर ने हमें ऐसा ऐसा फतवा दिया था।

(اتحاف السادۃ المتقین، کتاب العلم، ج1، ص651، 653 بہ حوالہ قوت القلوب اردو، ج1، فصل 31، ص741)

इस से सिर्फ उलमा ही को नही बल्कि उन मुबल्लिगीन, मुक़र्रीरीन और लोगो को भी इबरत हासिल करनी चाहिए जिन से आम लोग शरई मसा'इल पूछते है।

जवाब देने से पहले सोच समझ लें क्योंकि आख़िरत में इस के मुताल्लिक़ आप से भी सवाल किया जायेगा।

अगर मालूम हो तो ही कुछ बताए वरना खुले अल्फ़ाज़ में कह दें के मुझे इस का इल्म नहीं।

अगर आप ने किसी को गलत मस'अला बता दिया तो सिर्फ उसी का नही बल्कि वो जितने लोगो को बताएगा, सब के उस पर अमल करने का वबाल आप के सर आयेगा!

अब्दे मुस्तफ़ा

टाई

शहज़ादा -ए- आला हज़रत, मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिन्द, हज़रत अल्लामा मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा खान अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि टाई लगाना अशद हराम है, निहायत बद काम है, खुला रद्द -ए- फरमान -ए- खुदावन्द ज़ुलजलाले वल इकराम है।

टाई नसारा के यहाँ उनके अक़ीदा -ए- बातिला में यादगार है, हज़रते सैय्यिदुना ईसा अलैहिस्सलाम के सूली दिये जाने और सारे नसारा का फिदया हो जाने की।

والعیاذ باللہ تعالی

(فتاوی مفتی اعظم، ج5، کتاب الحظر والاباحۃ، ص144، وفتاوی مصطفویہ)

हुज़ूर मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिन्द एक मरतबा मुबारकपुर तशरीफ ले गये तो एक शख्स टाई बाँधे हुये आपसे मिलने के लिये हाज़िर -ए- खिदमत हुये, जब क़रीब आये तो हुज़ूर मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिन्द ने टाई पकड़ी और पूछा ये क्या है? फिर खुद ही फरमाया कि ये अंग्रेजों की तक़लीद है जिसे वो सलीब की जगह इस्तिमाल करते हैं, जो क़ुरान से मुतसादिम अक़ीदे पर मबनी है।
आपने उसके गले से टाई उतरवायी और तौबा करवायी, उसी जगह शमसुल उलमा, हज़रत मौलाना क़ाज़ी शमसुद्दीन जौनपुरी अलैहिर्रहमा ने इस मस'अले की मज़ीद वज़ाहत करते हुये फरमाया कि अंग्रेज़ चूँकि ये अक़ीदा रखते हैं कि हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को सूली दी गयी है इसीलिये वो अपने इस अक़ीदे की बिना पर जगह जगह सूली का निशान बनाते हैं और उसे अपने गले में भी लटकाते हैं मगर उनका ये अक़ीदा क़ुरान के बिल्कुल मुखालिफ है।

(فتاوی مفتی اعظم، مقدمہ، ص298، ملتقطاً)

हुज़ूर ताजुश्शरिया, हज़रत अल्लामा मुफ्ती अख्तर रज़ा खान अलैहिर्रहमा ने इस मस'अले पर तमाम पहलुओं को सामने रखकर तहक़ीक़ फरमायी है और टाई की शरयी हेसियत को बयान किया है।
आपकी ये तहक़ीक़ एक रिसाले "टाई का मस'अला" की शक्ल में मौजूद है।
इस रिसाले की तसदीक़ मौलाना सैय्यद मुस्तफा हैदर क़ादरी बरकाती (हसन मियाँ मारहेरवी) ने की है।
ये रिसाला अंग्रेज़ी में मुस्तक़िल तौर पर मौजूद होने के साथ साथ "अज़हरुल फ़तावा अंग्रेज़ी" में भी शामिल किया गया है।

एक सवाल के जवाब में मौलाना मुहम्मद नियाज़ अहमद बरकाती मिस्बाही, मुफ्ती -ए- आज़म -ए- हिन्द का फतवा नक़्ल करने के बाद लिखते हैं कि जिन स्कूल्स में टाई लगाना लाज़मी है उनमें बच्चों को तालीम दिलाना हराम है।
इस फतवे की तसदीक़ मुफ्ती निजामुद्दीन क़ादरी मिस्बाही और मौलाना मुहम्मद अबरार अहमद अमजदी बरकाती ने की है।

(انظر: فتاوی مرکز تربیت افتا، ج2، ص503، 504)

एक देवबंदी टाई के बारे में लिखता है कि टाई के इस्तिमाल में ये क़बाहत है कि इसमें गैर मुस्लिम अक़्वाम की मुशाबेहत पायी जाती है और ये इस बात का भी शुबह है कि ये दर हक़ीक़त सीने पर सलीब लटकाने की शक्ल हो लिहाज़ा इसके इस्तिमाल से परहेज़ करना लाज़मी है।

(اشرف الفتاوی، ص275)

दारुल उलूम देवबंद के ऑनलाईन इफ्ता में एक सवाल के जवाब में तहरीर है कि टाई गैर क़ौमों का लिबास है बल्कि इसकी इब्तिदा इसाईयों के बातिल अक़ीदे कि हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को सूली दी गयी है की अलामत के तौर पर हुयी थी इसलिये मुसलमान के लिये ये जायज़ नहीं।
एक दूसरी जगह जवाब में लिखा गया है कि ये अंग्रेज़ी लिबास का हिस्सा है और फुस्साक़ वा फुज्जार का भी लिबास है, इसका पहनना मम्नूअ़ है।

(ملخصًا: دار الافتا دیوبند ویب سائٹ، جواب163957، فتوی آئی ڈی: 863-1151، وجواب36266، آئی ڈی: 272=172-2/1433)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

किस्सा गो मस्जिद से बाहर

इमाम शैख़ अबु तालिब मक्की अलैहिर्रहमा (अलमुतवफ्फा 386 हिजरी) लिखते है के जब कोई शख़्स इल्म की मजलिस में हाज़िर न हो सके तो उस का नवाफिल पढ़ते रहना और अल्लाह त'आला के दीन में गौरो फिक्र करना, किस्सा गोई की महफ़िल में जाने और किस्से कहानिया सुनने से ज़्यादा पाकीज़ा है क्योंकि उलमा -ए- किराम के

नज़दीक किस्सा गोई एक बिद'अत है और वो किस्सा गो अफ़राद को मस्जिद से बाहर निकाल दिया करते थे, चुनाँचे :
एक दिन सय्यिदुना इब्ने उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा मस्जिद में अपनी मख़सूस नशिस्त के पास आये तो वहाँ एक किस्सा गो को किस्सा सुनाते पाया, पस उस से इरशाद फरमाया : मेरे बैठेने की जगह से उठ जाओ।
वो बोला : मैं नही उठूँगा, मैं इस जगह बैठ चुका हूँ।
रावी कहेते है के हज़रते इब्ने उमर ने सिपाही बुला कर उसे उस जगह से उठवा दिया!
अगर किस्सा गोई सुन्नत होती तो हज़रते इब्ने उमर कभी उस किस्सा गो को उस जगह पर बैठने के बाद न उठाते बिल ख़ुसूस इस सूरत में के वो आप से पहले वहाँ बैठ चुका था और ये कैसे मुमकिन है हालांकि खुद हज़रते इब्ने उमर ने रिवायात बयान की है के "तुम में से कोई भी अपने भाई को उस की जगह से उठा कर खुद ना बैठे बल्कि वुस'अत और कुशादगी इख्तियार कर लिया करो।"

(صحیح مسلم، کتاب السلام)

मन्कुल है के उम्मुल मोमेनीन हज़रते आएशा सिद्दीका रदिअल्लाहु त'आला अन्हा ने एक किस्सा गो के मुताल्लिक़ हज़रते इब्ने उमर को पैगाम भेजा तो आप ने उस किस्सा गो की इतनी पिटाई की के उस के पुश्त पर मार मार कर अपना असा तोड़ डाला, फिर उसे ऐसा ही फेंक दिया।

(قوت القلوب، اردو، ج1، ص336، 337، ملخصًا)

आज भी ऐसे किस्सा गो अफ़राद मौजूद है जिन्हें मोटी मोटी रकम दे कर किस्से बयान करने के लिए बुलाया जाता है और इन के मुकाबले में उलमा -ए- अहले सुन्नत को घास तक नही डाली जाती।
जिन्हें मस्जिद से बाहर निकालना चाहिए उन्हें मिम्बर पर बिठाया जाता है और दस्तबोसी की जाती है, ना जाने लोगो को कब ये बात समझ आएगी।

इस बात को समझे ही नहीं अहले गुलिस्ताँ
फूलों की ज़ुबाँ और है काँटो की ज़ुबाँ और

अब्दे मुस्तफ़ा

तू तो है अ़ब्दे मुस्तफ़ा

रास्ते से गुज़र रहा था कि एक तरफ से स्पीकर पर नात पढ़ने की आवाज़ आयी, पढ़ने वाला आला हज़रत रहीमहुल्लाह त'आला का ये शेर पढ़ रहा था :

ख़ौफ ना रख रज़ा ज़रा तू तो है अ़ब्दे मुस्तफ़ा

तेरे लिये अमान है तेरे लिये अमान है

सुनते ही दिल में एक अजीब सी कैफियत पैदा हो गयी।
कभी निगाहों के सामने हश्र की परेशानियों का मंज़र आता तो कभी ये शेर...,
जब गुनाहों की याद आती है तो ना उम्मीद हो जाता हूँ फ़िर ये शेर ढारस बांधता है।
इस शेर में आला हज़रत खुद को कहते हैं कि ए रज़ा तू क्यों घबरा रहा है और क़ियामत की हौलनाकियों से डर रहा है?
तुझे ज़र्रा बराबर भी फिक्र नहीं करनी चाहिये क्योंकि तू किसी मामूली दर का नौकर नहीं बल्कि गदा -ए- दर -ए- मुस्तफ़ा ﷺ है और जो उस दर के गुलाम होते हैं उनके लिये अमान ही अमान है।

मुझे क्या है कौन है किसका गदा

बस अ़ब्दे मुस्तफ़ा रहूँ मै सदा

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

जहेज़ की शरई हेषियत

मुसलमानों में ये रिवाज आम हो गया है कि निकाह से पहले लड़की वालों से जहेज़ की माँग की जाती है, अब तो बिल्कुल खुलकर कहा जाता है कि हमें एक लाख रुपये और एक गाड़ी चाहिये!
लड़की वालों की जान इतने में भी नहीं छूटती बल्कि सैकडों बारातियों और रिश्तेदारों के नखरे भी उठाने पड़ते हैं जिसमें लाख रुपये खर्च होना आम बात है।
ऐसे भी देखा गया है कि लड़की वाले एक लाख रुपये देने को तैयार हैं लेकिन गाड़ी देने की ताक़त नहीं रखते तो इस वजह से निकाह करने से इन्कार कर दिया जाता है!
इसे हम निकाह ना कह कर सौदा कहें तो ज़्यादा अच्छा लगेगा।

शरीअ़त में जहेज़ की मिक़दार तय करना बल्कि मिक़दार ना भी मुअय्यन हो, कहीं शादी करते वक़्त जहेज़ का मुतालबा ही करना या शादी के वक़्त मुतालबा करना या शादी हो जाने के बाद मुतालबा करना, ये सब हराम है।
ये रिशवत माँगना है और जो माल लिया माल -ए- हराम लिया, फ़र्ज़ है कि इसे वापस करे, इसको इस्तिमाल में लाना हराम है।
शामी में है :

جعلت المال علی نفسھا عوض عن النکاح وفی النکاح العوض لایکون علی المراۃ (ج5، ص701)

(انظر: مقالاتِ شارح بخاری، ج1، باب سوم، جہیز کی شرعی حیثیت، ص387)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

पसली और मुहब्बत

अल्लामा अब्दुल वह्हाब शारानी (मुतवफ़्फ़ा 973 हिजरी) लिखते हैं कि अगर कोई ये कहे कि हज़रते हव्वा को हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की पसली से ही क्यों पैदा किया गया तो इसका जवाब ये है कि इसमें ये हिकमत है कि (पसली में झुकाव है और) इस झुकाव की वजह से औरत को अपने शौहर और अपनी औलाद की तरफ मैलान रहे।
मर्द का बीवी की तरफ माइल होना हक़ीक़त में अपने उपर ही माइल होना है क्योंकि ये उस का जुज़ (हिस्सा) है जबकि औरत का शौहर की तरफ मैलान इसलिये है कि पसली से पैदा की गयी और पसली में झुकाव और मैलान है।
शैख (मुहियुद्दीन इब्ने अरबी) ने फरमाया कि अल्लाह त'आला ने उस जगह को जिससे आदम से हव्वा निकली, शहवत के साथ मामूर फरमाया ताकि वुजूद में खला (खाली जगह) बाक़ी ना रहे पस जब ख्वाहिश से ढांपी गयी तो इसने उसकी तरफ मैलान किया और ये अपनी तरफ ही माईल होना है क्योंकि वो आप का जुज़ और हव्वा आपकी तरफ माईल हुई क्योंकि ये इनका वतन है जिससे वो पैदा हुई।

अगर कोई कहे कि जब तो हव्वा की (आदम) से मुहब्बत वतन की मुहब्बत है जबकि आदम की मुहब्बत अपनी ज़ात की मुहब्बत है तो जवाब ये है कि हाँ ये इसी तरह है।

इसीलिये मर्द की औरत से मुहब्बत ज़ाहिर है कि ये इसका ऐन है, रही औरत तो उसे क़ुव्वत दी गयी है जिसे हया से ताबीर किया जाता है पस उस पर उसकी क़ुव्वत -ए-इख्फा की वजह से मर्द की मुहब्बत ज़ाहिर नहीं होती क्योंकि वतन उससे इस तरह मुत्तहिद नहीं जिस तरह उससे आदम का इत्तिहाद है।

(الیواقیت والجواھر فی بیان عقائد الاکابر، مترجم، ص270)

मज़्कूरा इक़्तिबास से ये बातें ज़ाहिर हुई :

(1) मर्द का औरत की तरफ माईल होना हक़ीक़त में अपनी तरफ ही माइल होना है क्योंकि वो इसका जुज़ है।

(2) औरत का भी मर्द की तरफ मैलान है लेकिन चूंकि ये मर्द की तरह उसका जुज़ की मानिन्द मुत्तहिद नहीं बल्कि वतन से मुहब्बत है इसीलिये औरत की मुहब्बत ज़ाहिर नहीं और इसकी एक वजह हया भी है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

OUR OTHER PAMPHLETS